श्रुजो वा एकपादकामयत। तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी
स्यामिति। स एतमजायैकपदे प्रोष्ठपदेश्यश्रुष्ठं निरंवपत्। तता वै स तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यभवत्। तेजस्वी इ वै
ब्रह्मवर्चसी भवति। य एतेन इविषा यजते। यउचिनदेवं वेदं। सोऽच जुहोति। श्रुजायैकपदे स्वाहा प्रोष्ठपदेश्यः स्वाहा। तेजसे स्वाहा ब्रह्मवर्चसाय स्वाहिति
॥ १०॥

श्रहिं बुधियां उत्तामयत। इमां प्रतिष्ठां विन्देयेति।
स एतमहेये बुधियाय प्राष्ठपदेश्यः पुराडाशं भूमिकपालं निरंवपत्। तता वै स इमां प्रतिष्ठामेविन्दत।
इमाः ह वै प्रतिष्ठां विन्दते। य एतेने हविषा यर्जते।
यर्जनैनदेवं वेदं। सोऽचे जुहोति। श्रह्ये बुधियाय
स्वाहा प्राष्ठपदेश्यः स्वाहा। पुतिष्ठाये स्वाहेति
॥११॥

पूषा वा अवामयत। पशुमान्त्यामिति। स एतं पूषा रेवत्यै चहं निरंवपत्। ततो वै स पशुमानंभवत्। पशुमान् इ वै भवति। य एतेनं इविषा यर्जते। यर्जचै-नदेवं वेदे। सोऽचं जुहोति। पूषा स्वाही रेवत्यै स्वाही। पशुभ्यः स्वाहेति॥ १२॥